"अज दा सिख"

" धंधा धावत दिन गइया-रैण गवाई सोई । "

कूड़ बोल विष खाइआ-मनमुख (अज दा सिख) चलिया रोई ।

अज दा दुर्लभ सिख अथवा शिष्य कूड़ बोल अर्थात कूड़ एकत्र करने में ही केवल स्वयं को श्रेष्ठ स्थापित कर रहा है फिर "दुर्लभ मांग अथवा भेंट" भी केवल "कूड़ विशेष" की ही सामने पेश करता है निश्चित रूप से । इसी में दिन तथा रात दोनों निरन्तर भेंट चढ़ाये जा रहे हैं निश्चित रूप से । अब कूड़ क्या है

"कूड़ राजा-कूड़ प्रजा कूड़ सभ संसार । कूड़ मंडप-कूड़ माड़ी-कूड़ बैंसणहार । कूड़ सोईना-कूड़ रूपा-कूड़ पैनणहार । कूड़ काईआ-कूड़ कपड़-कूड़ रूप अपार । कूड़ मीआ-कूड़ बीवी खप होये खार । कूड़-कूड़े नेह लगा विसरिआ करतार । किस नाल कीजै दोसती सभ जग चलणहार ? कूड़ मिठा-कूड़ माखिउ-कूड़ डोबे पूर (मनुष्य जन्म रूपी दुर्लभ जहाज अथवा बेड़ा)। नानक बखाणै बेनती तुध बाझ कूड़ो कूड़ ।" हे दुर्लभ प्राणी इन "मुर्दों के शहर अथवा शमशान भूमि" में बिना पुरुषार्थ किये कूड़ा विशेष तो एक तरफ रहा "मौत" भी तुझे मांगने के बावजूद उपलब्ध होनी केवल असंभव ही है निश्चित रूप से । शक है तो "दुर्लभ अस्पतालों में "तड़पते" हुऐ अपने जैसों विशेषों को ही जाकर के देख ले । "प्राणी तू आयो लाहा" (लाभ विशेष केवल "अकाल पुरख परमात्मा" से) लैण (मिलने) लगा कित कुफकड़े (केवल तेरा नानक गोबिंद इत्यादि नामों के ढोल-बाजे बजा-2 करके एकत्र किये जाने वाला विशेष-2 कूड़ा) सभ मुकदी चली "रैण" (उम्र रूपी रात) ! आज जो कुछ भी तुझे उपलब्ध है दुर्लभ मनुष्य के जन्म सहित केवल "अकाल पुरख परमात्मा" की "दुर्लभ दया विशेष" का ही फल है केवल । जो बिना तप अथवा पुरुषार्थ के कभी भी किसी को सुपने में भी उपलब्ध होनी केवल असंभव ही है निश्चित रूप से । "तप ते राज" ("दुर्लभ मनुष्य का जन्म")। "राज ते नरक" निश्चित रूप से केवल यही नतीजा निकल चुका

है केवल समयानुसार अपने आप अवश्य आवश्यकतानुसार प्रत्यक्ष होता ही जायेगा निश्चित रूप से ! मुबारक हो-मुबारक हो तुझे तेरा ये "दुर्लभ उत्कृष्ट आविष्कार" कूड़े विशेष अथवा वासनाओं के अथाह समुंद्र में डूबा हुआ "काल अथवा शैतानी ताकतों" के मुँह में दम तोड़ता-चन्द लम्हों का मेहमान "दुर्लभ विशेष" स्वंय को यदि इस मृत लोक अथवा शमशान भूमि या मुर्दो के शहर विशेष में "अकाली विशेष" होने का झूठा अथवा नकली दावा पेश करे, तो भला कौन प्रधान अपने पागलखाने विशेष में इस बिना दुम के दो पैरों वाले दुर्लभ विशेष को (जिसकी शक्ल बेशक किसी विशेष अजायबघर में कैद पिंजरे के "दुर्लभ प्राणी" से अवश्य मिलती जुलती है) इलाज करने का प्रवेश देवे तथा ठीक करने में असमर्थ होने पर दुनिया में अपने इकलौते रोजगार के साधन विशेष पागखाने के फेल होने की बदनामी का जोखिम भरा प्रमाणपत्र-(केवल अपने ही प्यारे-2 बच्चों को भूखा मारने का)-स्वंय के हाथों ही लिख करके अपने ही गले में बाँधे निश्चित रूप से अर्थात किसी पागलखाने में ये विशेष मर्ज केवल लाइलाज ही है यकीनी तौर पर । यानी के सब कुछ काल अथवा मौत का भयानक जबाड़ा निरन्तर हज्म करता चला जा रहा है निश्चित रूप से । यदि मर्द का बच्चा है तो "केवल स्वंय" को इस भयानक जबाड़े से मुक्त करवा के दिखा ! "सूरा सो पहचानिए जो लरै दीन के हेत !" बचना चाहता है तो इस बचन पर

व्यवहारिक रूप से पूरा उतर "केवल स्वंय" को निश्चित रूप से "जीवित मरिये भवजल तरिये ।" मती दास-सती दास-गोबिंद सिंह इत्यादि जैसी अनन्त आत्माओं ने केवल स्वंय के खून से ही होली खेली है निश्चित रूप से । दुनिया को सूली पर चढ़ाना बहुत आसान है पर स्वंय का सूली तक पहुँचना भी केवल दुर्लभ ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । "तुध बिन रोग रजाइयां दा ओडण नाग निवासां दे रहणा । सूल सुराही खंजर पिआला बिंग कसाइयां दा सहणां ।" अर्थात तुध यानी के केवल "परम चेतन सत्ता" को प्रत्यक्ष अनुभव किये बिना तेरा ये रोग अर्थात जन्म-मरन बार-2 अनन्त जन्मों से अनन्त काल तक का घोर दुखों से भरा हुआ कभी भी समाप्त होने वाला असम्भव ही है निश्चित रूप से और तू "रजाइयां दा ओडण" यानी के आराम परस्ती में डूबा हुआ है उसी का सामान एकत्र कर रहा है जो केवल तेरा आत्मिक मौत का साधन मात्र ही है निश्चित रूप से । "नाग निवासां दे रहणा" यानी के नौ द्वारों में भयानक विशधर नाग रूपी "विकराल शैतानी ताकतें" रूप बदल करके नकली परमात्मा अथवा देवता बन कर बैठी हैं तुझे सदा के वास्ते हज्म करने के हेतू तुझे घेर कर नचा रही हैं मौत का नाच निश्चित रूप से, और तू नाचने कूदने में व्यस्त है इन भयंकर नागों के मोह जाल में डूब कर इन्हीं पर अपनी "दुर्लभ हस्ती मनुष्य के जन्म" को निरन्तर व्यर्थ खर्च करता चला जा रहा है मीठे से भ्रम में "दीन" यानी कैदी

आत्मा स्वंय को इन शैतानी ताकतों के चंगुल से मुक्त करवाने की दुर्लभ लड़ाई विशेष को केवल जीते जी लड़ने पर ही सूरमा अथवा बहादुर कहलवाने का अधिकार रखती है निश्चित रूप से। "सुराही विशेष" तुझे अवश्य "सूल" भुगतने पर मजबूर कर ही देगी तथा खंजर यानी के "प्यालों विशेष" में तेरा डूबना तुझे अवश्य खंजर से छोटे-2 टुकड़े होने के लिये अथवा घोर दुखों में तड़पने के वास्ते तुझे ये सभी दुर्लभ प्याले विशेष निश्चित रूप से मजबूर ही कर देंगे यकीनी तौर पर। ये टुकड़े-2 करने वाले "दुर्लभ कसाई विशेष" भी बिंग यानी के ताना कसेंगे कि देखो एक और आ गया, दो पैर वाला बिना दुम का अथवा "दुर्लभ मनुष्य का जन्म" केवल वासना के अथाह समुंद्र में डुबो कर के घोर-2 नर्को विशेष को रोशन करने के हेतू अनन्त काल के लिये निश्चित रूप से। तेरे सभी प्रकार के प्रमादों विशेष का केवल यही नतीजा निकलता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर।

सिख का भाव है गुरू बचनों का व्यवहारिक स्वरूप होना निश्चित रूप से। प्रभु प्रेरणा है कि "नगन फिरत रंग एक कै ओह शोभा पाए !" ये जानने भर की देर थी कि कुशल गृहणी ने कमर कसी तथा प्रत्येक ऐसे वस्त्रों से घौर घिन होने लगी उसे, जो उसके दुर्लभ तन की विशेष सम्पति को प्रत्यक्ष होने में बाधा प्रस्तुत करे। उसे तो केवल वे ही वस्त्र विशेष भाते हैं जो अन्दर

की सम्पदा को फाड़ कर बाहर पेश करने में मददगार साबित होते हैं । अगर कुछ कभी अनुभव हो तो वस्त्र को कुछ मीठा सा विशेष लगा कर के रात को छुपा करके रख दिया जाता है जो सवेरे तक एक "दुर्लभ विशेष चूहे" द्वारा कुतर-2 कर विशेष-2 स्थानों से डिजाईन दुर्लभ बना कर के कुछ इस ढंग से कुशल गृहणी को बाजार में प्रस्तुत करता है कि देखने वाला केवल आँखों आँखों में ही पूरा का पूरा हज्म करने का अकथ दुर्लभ प्रयास करता है निरन्तर बिना पलक झपके निश्चित रूप से । पलक तो केवल उस "दुर्लभ लीर विशेष" की ही झपकती है जो दुर्लभ सम्पति विशेष को ढकने में केवल असमर्थ साबित होती है । ऐसी दुर्लभ हस्ती के लिये तो "नगन" लफज बहुत छोटा साबित होता है फिर इतनी अकथ मेहनत का फल संसार में शोभा भी अकथ ही उपलब्ध होती है निश्चित रूप से, यानी के सौदे का रेट बहुत हाई दर्जे का दुर्लभ हो जाता है यकीनी तौर पर दुर्लभ बाजार विशेष में । "नगन फिरत रंग एक कै" के चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप बने दुर्लभ विशेष सिख दम्पति को देख कर भला कौन गुरू विशेष प्रसन्न हुऐ बिना रह सकेगा या अपना खाना ही हज्म करने में समर्थ हो सकेगा निश्चित रूप से । आखिर प्रभु वचन हैं कि नगे फिरो (नगन फिरत) रंग यानी संसार में एक कै अर्थात मेरे यानी के प्रभु के बनाये हुऐ । फिर जो प्रभु वचन माने उस की तो चारों तरफ शोभा जै जै कार निश्चित ही है प्रभु वचन जो

ठहरा । फिर आज का दुर्लभ सिख दम्पति इस विशेष महंगाई के दुर्लभ समय का इस "नगे फिरने" से बढ़ कर और क्या सदुपयोग कर सकता है । पहले भी एक दुर्लभ सिख था जो अपनी आत्मा पर चढ़े वासनाओं के मोटे वस्त्र को खुर्च-2 कर उतार कर के स्वंय को निश्चित रूप से नंगा करता था तथा प्रभु के रंग यानी के प्रकाश में स्वंय को लीन रखता हुआ अनन्त मण्डलों में फिरता हुआ अपने निज के घर पहुचता था तथा दुर्लभ शोभा यानी के सदा के लिये जन्म मरन के भयंकर दुखों से छुटकारा प्राप्त करने का निश्चित रूप से प्रमाण पत्र प्रभु से प्राप्त करके "शैतानी ताकतों के मुँह" पर थूक करके सदा के लिये आनन्द के सागर अर्थात अपने "मूल दुर्लभ विशेष" में समा जाता था अनन्त काल के लिये निश्चित रूप से । कहाँ है आज वो दुर्लभ सिख विशेष ? पहले का दुर्लभ सिख-गुरू जी आप निकलो हम से "प्राण" बहुत मिल जायेंगे मिट्टी में रूलते-फिरते-आप सा "दुर्लभ गुरू" ढूंढने से भी नहीं मिलने का (चमकोर दी गढ़ी) ! अज दा सिख गुरू जान्दा है तो जाये (कमेटी वालों ने बहुत से छाप कर रख छोड़े हैं चाहे जितने "खरीद" कर ले आओ!) पर "जुबान इन्द्री का स्वाद" किसी कीमत पर भी अवश्य नहीं जाना चाहिये निश्चित रूप से !